१२. लोकगीत

विधा परिचय : प्रस्तुत काव्य लोकगीत का एक प्रकार है । लोकगीत पद, दोहा, चौपाई छंदों में रचे जाते हैं । लोकगीत में गेयता तत्व प्रमुखता से पाया जाता है । ये लोकगीत मुख्यत: जनसाधारण के त्योहारों से संबंधित होते हैं तथा त्योहारों की बड़ी ही सरस अभिव्यक्ति इन लोकगीतों में पाई जाती है । प्राय: ये लोकगीत परंपरा द्‌वारा अगली पीढ़ी तक पहुँच जाते हैं और हमारे लोकजीवन की संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने का सामाजिक कर्तव्य पूर्ण करते हैं । 'कजरी', 'सोहर', 'बन्ना-बन्नी' लोकगीतों के प्रकार हैं । लोकगीतों की भाषा में ग्रामीण जनजीवन बोली का स्पर्श रहता है । सहज-सरल शब्दों का समावेश, ग्रामीण प्रतीकों, बिंबों और लोककथा का आधार लोकगीतों को सजीव बना देता है ।

पाठ परिचय : दूसरे लोकगीत में सावन-भादों के महीने में प्रकृति का सुंदर और मनमोहक दृश्य चारों ओर दिखाई देता है । नवविवाहिताएँ मायके आती हैं, युवतियाँ हर्षित हो जाती हैं, पेड़ों पर झूले पड़ते हैं, वर्षा से पूरी धरती हरी-भरी हो उठती है, नदियाँ बहती हैं, त्योहारों की फसल उग आती है । सबके चेहरे चमक-दमक उठते हैं । यही भाव सावन के इस गीत अर्थात कजरी में व्यक्त हुआ है ।

प्रथम लोकगीत में बसंत ऋतु के आगमन पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तन का सजीव वर्णन चित्रित हुआ है । इस लोकगीत में एक युवती अपनी सखियों से बसंत ऋतु के आने से खिल उठी प्रकृति की सुंदरता को बताती है । सरसों का सरसना, अलसी का अलसाना, धरती का हरसाना, कलियों का मुस्काना, खेत, तन और मन का इंद्रधनुष की तरह रँगना, आँखों का कजराना, बगिया का खिल उठना, कलियों का चटक उठना और अंत में वियोग की स्थिति इस लोकगीत में व्यक्त जनमानस की भावना को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करती है ।

* सुनु रे सखिया *

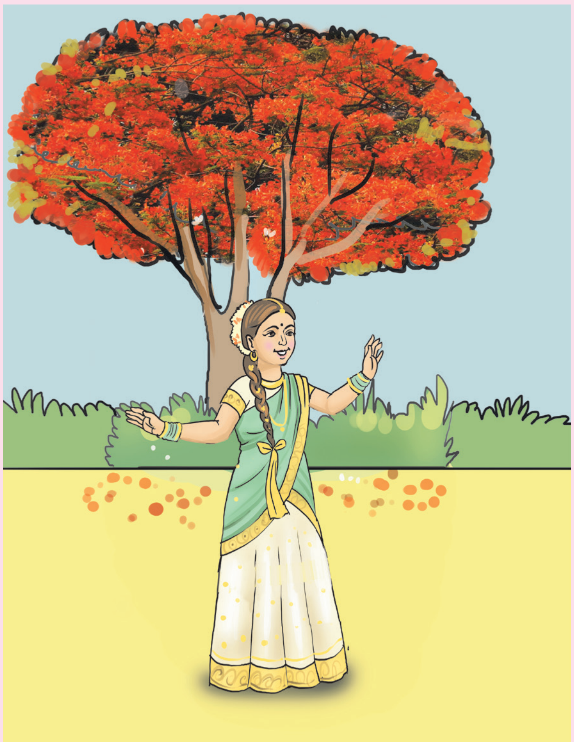

आइल बसंत के फूल रे, सुनु रे सखिया ।
सरसों सरसाइल
अलसी अलसाइल
धरती हरसाइल
कली-कली मुसुकाइल बन के फूल रे, सुनु रे सखिया ।।
आइल...
खेत बन रँग गइल
तन मन रँग गइल
अइसन मन भइल
जइसे इंद्रधनुष के फूल रे, सुनु रे सखिया ।।
आइल...
अँखिया कजराइल
सपना मुसुकाइल
कंठ राग भराइल
बगिया फूलल यौबन फूल रे, सुनु रे सखिया ।।
आइल...

बहे मस्त बयार,
झर-झर झरे प्यार
रंग गइल तार-तार
हर मनवा गुलाब के फूल रे, सुनु रे सखिया ।।
आइल...
बगिया मुसुकाइल
कली-कली चिटकाइल
भौंरा दल दौड़ि आइल
गौरैया के माथे करिया फूल रे, सुनु रे सखिया ।।
आइल...
आँख चुभे कजरा
काँट भये सेजरा
आँसु भिगे अँचरा
पिया बो गये बबूल के फूल रे, सुनु रे सखिया ।।
आइल...

❋ कजरी ❋

सावन आइ गये मनभावन, बदरा घिर-घिर आवै ना !
बदरा गरजै बिजुरी चमकै, पवन चलति पुरवैया ना !
सावन...
रिमझिम-रिमझिम मेहा बरसै, धरती काँ नहवावै ना !
सावन...
दादुर, मोर, पपीहा बोलै, जियरा मोर हुलसावै ना !
सावन...
जगमग-जगमग जुगुनू डोलै, सबकै जियरा लुभावै ना !
सावन...
लता, बेल सब फूलन लागीं, महकी डरिया-डरिया ना !
सावन...
उमगि भरे सरिता सर उमड़े, हमरो जियरा सरसै ना !
सावन...
संकर कहैं बेगि चलो सजनी, बँसिया स्याम बजावै ना !
सावन...

× ×　　　　× ×

शब्दार्थ (सुनु रे सखिया)

आइल = आया
हरसाइल = हर्षित होना
भइल = हुआ
चिटकाइल = चटककर खिल उठी
सेजरा = सेज
सरसाइल = सरस हुआ अर्थात फूलों से लद गई
गइल = गया
कजराइल = काजल लगाया
करिया = काला
अँचरा = आँचल

(कजरी)

पुरवैया = पूरब की ओर से बहने वाली हवा
दादुर = मेंढक
सर = तालाब
मेहा = मेघ, बादल
हुलसावै = आनंदित होना
सरसै = आनंद से भर जाना

आकलन

१. (अ) उत्तर लिखिए :-

(१) मन को प्रसन्न करने वाले – ....

(२) धरती को नहलाने वाले – ....

(आ) परिवर्तन लिखिए :-

वसंत ऋतु से आया

→ बाग-बगीचों में – ....

→ खेतों में – ....

शब्द संपदा

२. उचित जोड़ियाँ मिलाइए :-

'अ'	'ब'
(१) तालाब	(१) सरिता
(२) नदी	(२) सर
(३) बयार	(३) भ्रमर
(४) भौंरा	(४) हवा

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'सावन बड़ा मनभावन', इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(आ) 'बसंत के आगमन पर प्रकृति खिल उठती है', इस तथ्य को स्पष्ट कीजिए।

रसास्वादन

४. 'बसंत और सावन ऋतु जीवन के सौंदर्य का अनुभव कराते हैं।' इस कथन के आधार पर कविता का रसास्वादन कीजिए।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. (अ) लोकगीतों की दो विशेषताएँ :-

....

....

(आ) लोकगीतों के दो प्रकार :-

....

६. **निम्नलिखित शब्दसमूह के लिए कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर शब्दसमूह के सामने लिखिए ।**

(**शब्द** – पुरस्कार, मितव्ययी, शिष्टाचार, अखाद्य, अमूल्य, प्रणाम, अहंकार, हर्ष, गगनचुंबी, शोक, प्रवचन, अवैध, क्षमाप्रार्थी, मनोहर, अदृश्य)

(१) मन का गर्व –

(२) आंतरिक प्रसन्नता –

(३) जिस वस्तु का मूल्य आँका न जा सके –

(४) धार्मिक विषयों पर दिया जाने वाला व्याख्यान –

(५) किसी अच्छे कार्य से प्रसन्न होकर दी जाने वाली धनराशि –

(६) प्रिय व्यक्ति की मृत्यु पर प्रकट किया जाने वाला दुख –

(७) बड़ों के प्रति किया जाने वाला अभिवादन –

(८) कम व्यय करने वाला –

(९) आकाश को चूमने वाला –

(१०) जो विधि या कानून के विरुद्ध हो –

(११) क्षमा के लिए प्रार्थना करने वाला –

(१२) सभ्य पुरुषों का आचरण –

(१३) मन को हरने वाला –

(१४) जो दिखाई न दे –

(१५) जो खाने योग्य न हो –